पाठ 12

चित् और स्म निपात; संधि का एक नियम, तस्(तः) प्रत्यय, निजवाचक 'स्वयम्'; सिंह-शशकयोः कथा; एक वार्तालाप और दो श्लोक

12.1 सा. जब सर्वनाम **किम्** या **किम्** से व्युत्पन्न रूपों के साथ **चित्** का प्रयोग किया जाता है तो उनमें अनिश्चितता का भाव आ जाता है।

कः	कौन?	→	**कश्चित्**	कोई
कस्य	किसका?	→	**कस्यचित्**	किसी का
किम्	क्या?	→	**किंचित्**	थोड़ा-सा
केन	किसके द्वारा?	→	**केनचित्**	किसी के द्वारा
कानि	कौन, क्या?	→	**कानिचित् फलानि**	कुछ (फल)
कस्मिन्	किसमें?	→	**कस्मिंश्चित् देशे**	किसी (देश) में

12.2 सन्धि : संधि में जब **न्** के बाद **च्** या **छ्** आता है तो **न्** और **च्** या **छ्** के बीच **श्** जोड़ दिया जाता है और जब **न्** के बाद **त्** या **थ्** आता है तब **न्** और **त्** या **थ्** के बीच **स्** जोड़ दिया जाता है। इन दोनों ही स्थितियों में **न्** को अनुस्वार हो जाता है; जैसेः-

कान् + चिद् = काँश्चिद्, **कस्मिन् + चिद् = कस्मिंश्चिद्**

शोकान् + तरति = शोकाँस्तरति (दुःखों को पार कर जाता है)

12.3 प. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

1. कश्चिद् जनः ह्यः प्रातःकाले अत्र आगच्छत्। 2. एतत् पुस्तकम् कस्यचित् छात्रस्य वर्तते[1]। 3. कस्मिंश्चित् वने एकः आश्रमः आसीत्। 4. घटे किञ्चित् अपि जलं न वर्तते। 5. सा बालिका केनचित् बालकेन सह क्रीडति। 6. सभायां केचित् जनाः अतीव कोलाहलम्[2] अकुर्वन्। 7. सः कानिचित् मधुराणि फलानि मह्यम् अयच्छत्। 8. अस्मिन् नगरे अपि तस्य कानिचित् मित्राणि वर्तन्ते[3]।

(**शब्दार्थः**- 1. वर्तते– है बहु. वर्तन्ते–हैं, 2. शोर, 3. हैं)

12.4 क्रि. हमने पिछले पाठ में पढ़ा था कि **लङ् लकार** (भूतकाल) का प्रयोग भूतकाल में होने वाले कार्य को सूचित करने के लिए होता है। भूतकाल में होने वाले कार्य को-विशेषतः सातत्यबोधक भूतकाल को सूचित करने का एक और भी तरीका है। इसके लिए वर्तमान काल की धातु के साथ **स्म** निपात का प्रयोग किया जाता है, जैसेः **गच्छति स्म**–जाता था, **पश्यति स्म**–देखता था। **वसति स्म**–रहता था।

12.5 प. नीचे दी हुई कथा को पढ़िए व उसका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

सिंह-शशकयो: कथा

1. कस्मिंश्चिद्[1] वने एक: सिंह: वसति स्म। तस्य नाम दुर्दान्त: आसीत्। स: अतीव क्रूर:[2] आसीत्। स: कारणं विना एव पशूनां वधम्[3] अकरोत्। वनस्य पशव: अति चिन्तिता: अभवन्। ते सर्वे एकदा[4] दुर्दान्तस्य समीपम् अगच्छन् अवदन्[5] च—

2. भो: वनराज, त्वं किमर्थं[6] प्रतिदिनम् अस्य वनस्य पशूनां वधं करोषि? तव भोजनाय तु एक: पशु: एव पर्याप्त: अस्ति। वयं तव भोजनाय प्रतिदिनम् एकं पशुं प्रेषयाम:[7]। दुर्दान्त: अवदत्-साधु[8], अनेन प्रस्तावेन मम सहमति:।

(**शब्दार्थ**: 1. किसी; 2. अतीव (अति + इव) **क्रूर**:—बहुत निर्दयी; 3. हत्या; 4. एक बार; 5. बोले; 6. किसलिए, क्यों; 7. **प्रेषय्** — भेजना; 8. ठीक है, अच्छा)

3. तदनन्तरं[1] वनस्य पशूनां मध्यात्। [2] प्रतिदिनम् एक: पशु: दुर्दान्तस्य भोजनाय तस्य समीपं गच्छति स्म। एकदा एकस्य शशकस्य[3] वार: आगच्छत्। स: अचिन्तयत्- मम मरणं तु निश्चितम् एव, किन्तु अहम् अस्य क्रूरस्य सिंहस्य मृत्यो: उपायम् अपि करोमि।

4. शशक: अति विलम्बेन दुर्दान्तस्य समीपम् अगच्छत्। दुर्दान्त: तदा क्षुधया[4] अति पीडित: आसीत्। स: शशकं दृष्ट्वा[5] अतीव अकुप्यत्। दुर्दान्त: शशकम् अवदत् — प्रथमं तु त्वम् अतीव क्षुद्र:, पुन: विलम्बेन कुत:[6] आगच्छ:? तव अपराधस्य[7] कारणात् अद्य अहम् अस्य वनस्य सर्वेषां पशूनां वधं करोमि।

(**शब्दार्थ**: 1. उसके बाद; 2. बीच में से; 3. **शशक**:— खरगोश; 4. **क्षुधा**— भूख; 5. देखकर; 6. क्यों; 7. अपराध)

5. शशक: अवदत् — हे वनराज, न मम दोष:[1]। अहं तु प्रात:काले एव तव समीपम् आगमनाय[2] अचलम्। किन्तु मार्गे एक: अन्य: सिंह: आसीत्। स: माम् अवदत् — अहम् अस्य वनस्य राजा। त्वम् अद्य मम भोजनम्। अहम् अधुना[3] त्वां भक्षयामि।

6. अहं तम् अकथयम् — अस्य वनस्य राजा तु अन्य: सिंह: अस्ति। तस्य नाम दुर्दान्त:। अस्य वनस्य पशूनाम् उपरि[4] तस्य एव अधिकार:। प्रथमम् अहं तस्य समीपं गच्छामि। पश्चात्[5] तव समीपम् आगच्छामि।

(**शब्दार्थ**: 1. अपराध, कसूर; 2. आने के लिएँ 3. अब; 4. पर; 5. बाद में)

7. शशकस्य कथनं श्रुत्वा[1] दुर्दान्त: अतीव क्रुध्द: अभवत्। स: शशकम् अवदत् — कुत्र स: अन्य: सिंह:? अहं प्रथमं तस्य एव वधं करोमि। शशक: दुर्दान्तम् एकस्य गभीरस्य कूपस्य[2] समीपम् अनयत् अवदत् च — स: अन्य: सिंह: अस्मिन् कूपे एव प्रच्छन्न:[3] तिष्ठति।

8. दुर्दान्त: कूपस्य जले स्वप्रतिबिम्बम्[4] अपश्यत्। स: क्रोधेन अपृच्छत्[5]- त्वं क: असि? कूपस्य मध्यात् प्रतिध्वनि:[6] आगच्छत् — त्वं क: असि? अधिकेन क्रोधेन[7] दुर्दान्त: अवदत् — अहम् अस्य वनस्य राजा। पुन: अपि कूपस्य मध्यात् प्रतिध्वनि: आगच्छत्-अहम् अस्य वनस्य राजा।

9. दुर्दान्त: क्रोधेन उन्मत्त:[8] अभवत्। स: प्रतिबिम्बस्य सिंहस्य वधाय स्वं[9] कूपस्य मध्ये अक्षिपत्[10] मृत्युं च अगच्छत्।

(**शब्दार्थ**: 1. सुनकर; 2. गभीरः कूपः गहरा कुआँ; 3. छिपा हुआँ 4. अपनी छाया को; 5. पूछा; 6. गूँज; 7. **अधिकेन क्रोधेन**—और अधिक गुस्से से; 8. पागल; 9. अपने आपको; 10. फेंक दिया।)

12.6 अ. सिंह-शशकयो कथा में से निम्नलिखित धातुओं के भूतकाल (लङ् लकार) के रूप चुनिए:

अस्, कथ्, कुप्, कृ, क्षिप्, गम्, चल, दृश्, नी, प्रच्छ्, भू, वद्

12.7 अ. वृद्धावस्था में खरगोश अपने पोते-पोतियों को यह कहानी सुनाता है। इसका संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

i. युवावस्था में मैं एक जंगल में रहता था।
ii. हमारे वन का राजा एक शेर था। उसका नाम दुर्दान्त था। वह बहुत क्रूर था।
iii. हम उसके भोजन के लिए प्रतिदिन एक जानवर भेजते थे।
iv. एक बार मेरी बारी आई।
v. मैं दुर्दान्त के पास बहुत देर से पहुँचा।
vi. वह मुझ पर बहुत नाराज हुआ। उसने मुझसे पूछा, "तुम इतनी देर से क्यों आए हो?"
vii. मैंने कहा-रास्ते में मुझे एक और शेर मिला। उसने मुझसे कहा, "मैं इस जंगल का राजा हूँ।"
viii. दुर्दान्त ने मुझसे कहा, "मुझे उस शेर के पास ले चलो।"
ix. मैं उसे एक गहरे कुएँ पर ले गया। कुएँ के पानी में उसने अपना प्रतिबिम्ब देखा। उसने गुस्से से पूछा, "तुम कौन हो?"
x. कुएँ से प्रतिध्वनि आई, "तुम कौन हो?"
xi. दुर्दान्त क्रोध से पागल हो गया, उसने अपने आप को कुएँ में फेंक दिया। वह वहाँ मर गया।

12.8 सा. कुछ सर्वनामों से अपादान अर्थ वाले अव्यय बनाने के लिए **तस् (तः)** प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, जैसे:

अतः	यहाँ से, इसलिए	**कुतः**	कहाँ से, क्यों?
ततः	वहाँ से, तब	**यतः**	जहाँ से (संबधवाचक)
सर्वतः	सब ओर से	**मत्तः**	मुझसे

भवान् कुतः आगच्छति— आप कहाँ से आ रहे हैं?

यतः सः आच्छति ततः अहम् आगच्छामि—जहाँ से वह आ रहा है वहाँ से मैं आ रहा हूँ।

यत: और **अत:** अव्ययों का प्रयोग कारण-कार्य संबंध दिखाने के लिए भी होता है। **यत: स: सदा क्रोधं करोति (अत:) जना: तस्मिन् न स्निह्यन्ति**—क्योंकि वह हमेशा क्रोध करता है इसलिए लोग उससे प्यार नहीं करते।

12.9 प. वार्तालाप

1. **सुभाष:** नमस्ते।
2. **प्रकाश:** नमस्ते। अपि भवतां सव; कुशलम्[1]?
3. **सुभाष:** आम् कुशलम्। अहं गतमासे[2] स्वमित्रैः सह ऋषिकेशम् अगच्छम्।
4. **प्रकाश:** भवन्तः तत्र कथम्[3] अगच्छन् ?
5. **सुभाष:** वयं दिल्लीनगरात् हरिद्वारं यावत्[4] रेलयानेन[5], ततः च बसयानेन अगच्छाम।
6. **प्रकाश:** भवन्तः तत्र कुत्र न्यवसन् (नि + अवसन्)?
7. **सुभाष:** वयम् ऋषिकेशस्य एकस्मिन् आश्रमे न्यवसाम। आश्रमः गंगायाः तटे[6] अस्ति।
8. **प्रकाश:** तत्र भवन्तः किम् अकुर्वन् ?
9. **सुभाष:** आश्रमे प्रातःकाले सायंकाले च मुनीनां प्रवचनानि[7] आसन्। वयं योगासनानि अपि अकुर्म।
10. **प्रकाश:** किं भवन्तः ऋषिकेशात् उपरि अपि अगच्छन् ?
11. **सुभाष:** आम्, ऋषिकेशात् उपरि अपि वयम् अगच्छाम।
12. **प्रकाश:** तत्र भवन्तः किम् अपश्यन् ?
13. **सुभाष:** वयं हिमालयपर्वतस्य अति मनोहराणि दृश्यानि[8] अपश्याम। सर्वत्र शान्तिः आसीत्। मार्गे बहूनि मंदिराणि आसन्। बहवः भक्ताः तेषु पूजां कुर्वन्ति स्म। वयं गोमुखं यावत् अगच्छाम।
14. **प्रकाश:** गोमुखं किम् अस्ति?
15. **सुभाष:** गोमुखात् गंगा नदी उद्गच्छति[9]।
16. **प्रकाश:** अपि गंगायाः जलं तत्र अति शीतलम् ?
17. **सुभाष:** अतीव शीतलमस्ति तत्र गंगायाः जलम्। किन्तु[10] वयं गंगायाः शीतलेन जलेन स्नानम् अकुर्म। अहम् अद्य अपि तं स्नानं स्मरामि।

(शब्दार्थ:—1. प्रसन्न, आनन्दपूर्वक, ठीक-ठाक, 2. पिछले महीने, 3. कैसे, 4. तक, 5. रेलगाड़ी से, 6. किनारे, 7. भाषण, 8. (सुन्दर) दृश्य, 9. निकलती है, 10. लेकिन।)

12.10 सा. स्वयम् एक निजवाचक अव्यय है। इसका प्रयोग सभी पुरुषों के साथ उसके, मेरे, हमारे के स्थान पर अपने-आप के अर्थ में होता है।

अहं तत्र स्वयं गच्छामि— मैं वहाँ अपने-आप जाऊँगा।

स: स्वयमेव एतत् सर्वं धनं आर्जत् — यह सारा पैसा उसने अपने आप कमाया।

ते स्वयमेव स्वभोजनम् अपचन् – उन्होंने अपने-आप अपना भोजन बनाया।

वयं सर्वे स्वयं भवत: समीपम् आगच्छाम: –हम सब अपने आप आपके पास आ रहे हैं।

12.11 प. आइए, अब हम संस्कृत के दो श्लोक पढ़ें:

(क) उद्यम:[1] साहसं धैर्यं बुद्धि: शक्ति: पराक्रम:[2]।
षट् एते यत्र वर्तन्ते[3] तत्र देव: सहायक:॥

(ख) यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा[4] शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां[5] विहीनस्य[6] दर्पण:[7] किं करिष्यति॥

(**शब्दार्थ:**– 1. मेहनत, परिश्रम; 2. वीरता; 3. हैं, 4. बुद्धि, 5. **लोचनम्** – ऑख, 6. **विहीन**– रहित, 7. आइना, शीशा।)

अभ्यासों के उत्तर

12.3 प. 1. कोई व्यक्ति कल सुबह यहाँ आया। 2. यह पुस्तक किसी विद्यार्थी की है। 3. किसी जंगल में एक आश्रम था। 4. घड़े में जरा-सा भी पानी नहीं है। 5. वह लड़की किसी लड़के के साथ खेल रही है। 6. सभा में कुछ लोगों ने बहुत शोर मचाया। 7. उसने कुछ मीठे फल मुझे दिए। 8. इस शहर में भी उसके कुछ मित्र हैं।

12.5 प. किसी जंगल में एक शेर रहता था। उसका नाम दुर्दान्त था। वह बहुत क्रूर था। वह बिना कारण जंगल के जानवरों का वध करता था। जंगल के जानवर बहुत चिंतित हो गए। वे सब एक बार दुर्दान्त के पास गए और कहा, हे वनराज! आप क्यों प्रतिदिन इस जंगल के जानवरों का वध करते हैं? आपके भोजन के लिए तो एक जानवर ही पर्याप्त है। हम आपके भोजन के लिए प्रतिदिन एक जानवर भेजेंगे। दुर्दान्त ने कहा, ठीक है मैं तुम्हारे इस प्रस्ताव से सहमत हूँ।

उसके बाद, प्रतिदिन जंगल के जानवरों में से एक जानवर दुर्दान्त के भोजन के लिए उसके पास जाने लगा। एक बार एक खरगोश की बारी आई। उसने सोचा, "मेरी मृत्यु तो निश्चित ही है। परन्तु मैं इस क्रूर शेर को मारने का कोई उपाय करूगा;।"

खरगोश दुर्दान्त के पास बहुत देर से पहुँचा। उस समय दुर्दान्त को बहुत भूख लगी थी। वह खरगोश को देख कर बहुत क्रुध्द हुआ। दुर्दान्त ने खरगोश से कहा, "एक तो तुम बहुत छोटे हो, और फिर तुम देर से क्यों आए? तुम्हारे अपराध के कारण मैं आज इस जंगल के सभी जानवरों का वध कर रहा हँ।"

खरगोश ने कहा, 'हे वनराज, इसमें मेरा कोई अपराध नहीं है। मैं तो आपके पास आने के लिए सुबह ही चल पड़ा था। परन्तु रास्ते में एक और शेर था। उसने मुझसे कहा, "मैं इस जंगल का राजा हूँ। तू आज मेरा भोजन है। मैं अब तुम्हें खाता हूँ।

मैंने उससे कहा, "इस वन का राजा तो दूसरा शेर है। उसका नाम दुर्दान्त है। इस वन के जानवरों पर उसी का अधिकार है। पहले मैं उसके पास जा रहा हूँ। बाद में तुम्हारे पास आता हूँ।

खरगोश की बात को सुनकर दुर्दान्त को बहुत गुस्सा आया। उसने खरगोश से कहा-वह

दूसरा शेर कहाँ है? मैं पहले उसी का वध करू;गा। खरगोश दुर्दान्त को एक गहरे कुएँ के पास ले गया और कहा, "वह दूसरा शेर इसी कुएँ में छिपा हुआ है।

दुर्दान्त ने कुएँ के पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखा। उसने गुस्से से पूछा, तुम कौन हो? कुएँ के अन्दर से प्रतिध्वनि आई, तुम कौन हो? और अधिक गुस्से से दुर्दान्त बोला—"मैं इस वन का राजा हूँ। फिर कुएँ के अन्दर से प्रतिध्वनि आई 'मैं इस वन का राजा हूँ।

दुर्दान्त गुस्से से पागल हो गया। उसने उस प्रतिबिंब रूप सिंह के वध के लिए अपने आप को कुएँ में फेंक दिया और वहीं मर गया।

12.6 अ. अस् - आसीत्, **कथ्** - अकथयम्, **कुप्** - अकुप्यत्, **कृ** - अकरोत्, **क्षिप्** - अक्षिपत्, **गम्** - अगच्छन्, **आगच्छ**: - अगच्छत्, **चल्** - अचलम्, **चिन्त्** - अचिन्तयत्, **दृश्** - अपश्यत् , **नी** - अनयत्, **भू** - अभवन्, अभवत्, **वद्** - अवदन्, अवदत्।

12.7 अ i) यौवने अहम् एकस्मिन् वने अवसम्। **ii)** अस्माकं वनस्य राजा एकः सिंहः आसीत्। तस्य नाम दुर्दान्तः आसीत्। सः अतीव क्रूरः आसीत्। **iii)** वयं तस्य समीपे एकं पशुं प्रतिदिनं प्रैष्याम। **iv)** एकदा मम वारः आगच्छत्। **v)** अहं दुर्दान्तस्य समीपम् अति विलम्बेन अगच्छम्। **vi)** सः मह्यम् अतीव अक्रुध्यत्। सः माम् अपृच्छत्- त्वं किमर्थम् अतिविलम्बेन आगच्छः? **vii)** अहम् अकथयम्- मार्गे एकः अन्यः सिंहः आसीत्। सः माम् अकथयत्- अहम् अस्य वनस्य राजा अस्मि। **viii)** दुर्दान्तः माम् अकथयत्- मां तस्य सिंहस्य समीपं नय। **ix)** अहं तम् एकस्य गभीरस्य कूपस्य समीपम् अनयम्। कूपस्य जले सः स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्। सः क्रोधेन अपृच्छत्- त्वं कः असि? **x)** कूपात् प्रतिध्वनिः आगच्छत्- त्वं कः असि? **xi)** दुर्दान्तः अवदत्- अहम् अस्य वनस्य राजा अस्मि। **xii)** कूपात् पुनः प्रतिध्वनिः आगच्छत्- अहम् अस्य वनस्य राजा। **xiii)** दुर्दान्तः क्रोधेन उन्मत्तः अभवत्। सः स्वं कूपे अक्षिपत्। तत्र सः मृत्युम् अगच्छत्।

12.9 प. 1. नमस्ते। 2. नमस्ते, आप कैसे हैं? (क्या आप सकुशल हैं?) 3. हाँ, मैं बिल्कुल ठीक-ठाक हूँ। मैं पिछले मास अपने मित्रों के साथ ऋषिकेश गया था। 4. तुम वहाँ कैसे गए? 5. हम दिल्ली से हरिद्वार तक रेलगाड़ी में गए और वहाँ से बस में गए। 6. वहाँ तुम कहाँ ठहरे? 7. हम ऋषिकेश के एक आश्रम में ठहरे। आश्रम गंगा नदी के किनारे है। 8. वहाँ तुमने क्या किया? 9. वहाँ प्रातः और सायं मुनियों के प्रवचन होते थे। हमने योगासन भी किए। 10. क्या तुम ऋषिकेश से ऊपर भी गए? 11. हाँ, हम ऋषिकेश से ऊपर भी गए। 12. वहाँ तुमने क्या देखा? 13. वहाँ हमने हिमालय पर्वत के बहुत सुन्दर दृश्य देखे। वहाँ चारों ओर शान्ति थी। वहाँ रास्ते में बहुत-से मंदिर थे। बहुत-से भक्त लोग वहाँ पूजा कर रहे थे। हम गोमुख तक गए। 14. गोमुख क्या है? 15. गोमुख से गंगा नदी निकलती है। 16. क्या वहाँ गंगा का पानी बहुत ठंडा है? 17. वहाँ गंगा का पानी बहुत ठंडा है। परन्तु हमने (वहाँ) गंगा के ठंडे पानी में स्नान किया। मैं आज भी उस स्नान को स्मरण करता हूँ।

12.11 प. क) जिस व्यक्ति के पास उद्यम (मेहनत), साहस (हिम्मत), धैर्य, बुद्धि, बल और पराक्रम ये छह गुण होते हैं उसका भगवान सहायक होता है।

ख) जिस व्यक्ति में अपनी बुद्धि न हो उसका शास्त्र भी क्या कर सकते हैं? जिस व्यक्ति के पास आँखें न हों उसकी दर्पण भी क्या सहायता कर सकता है?